KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMICS, COMMERCE & BUSINESS MANAGEMENT
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJECBM/ JAN-MAR (2018)/VOL-5/ISS-1/A7 PAGE NO.24-26
ISSN: 2348-4969 IMPACT FACTOR (2017) – 7.8902
UGC APPROVED JOURNAL NO. 47663
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता

[1]Dr. SANJEET
[1]Lecturer in History, G.S.S.S. Baniyani (Rohtak)

शोध आलेख सार

स्वामी विवेकानन्द, भारत की महान आत्मा थे जिनके प्रति वर्तमान पीढ़ी ऋणी है और भावी पीढ़ी सदैव ऋणी रहेगी। उन्होंने पूर्व एवं पश्चिम की संस्कृतियों के श्रेष्ठ तत्वों का समन्वय करने का प्रयास किया। विदेशों में भारतीय संस्कृति की महानता को, धर्म के सार्वदैशिक स्वरूप को उन्होंने स्पष्ट और तार्किक रूप में रखा। विवेकानन्द भारतीय राष्ट्रीयता के एक महान पुरोधा थे तथा मानव कल्याण, व्यक्ति के आत्मविश्वास व गौरव की प्रेरणा देने वाले थे। स्वामी जी ने विश्व संसद में भाग लेकर भारतीय संस्कृति का विश्व में लोहा मनवाया और वहां उपस्थित सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। प्रस्तुत शोध पत्र में स्वामी विवेकानन्द के चिन्तन की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया है।

मूलशब्द– *पश्चिम संस्कृति, भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीयता, मानव कल्याण, धर्म संसद ।*

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org